# विपश्यना

## साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

**बुद्धवर्ष 2566, श्रावण पूर्णिमा, 12 अगस्त, 2022, वर्ष 52, अंक 2**

**वार्षिक शुल्क** रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

### धम्मवाणी

**पमादं अप्पमादेन, यदा नुदति पण्डितो।**
**पञ्ञापासादमारुय्ह, असोको सोकिनिं पजं।**
**पब्बतट्ठोव भूमट्ठे, धीरो बाले अवेक्खति॥**

– धम्मपदपालि 28, अप्पमादवग्गो.

– जब कोई समझदार व्यक्ति प्रमाद को अप्रमाद से परे धकेल देता (अर्थात, जीत लेता) है, तब वह प्रज्ञारूपी प्रासाद पर चढ़ा हुआ शोकरहित हो जाता है। (ऐसा) शोकरहित धीर (मनुष्य) शोकग्रस्त (विमूढ़) जनों को ऐसे ही (करुण भाव से) देखता है जैसे कि पर्वत पर खड़ा हुआ (कोई व्यक्ति) धरती पर खड़े हुए लोगों को देखे।

## बाबूभैया को लिखे गये पत्रों के कुछ अंश (क्रमशः)

भारत के शिविरों के बारे में सयाजी ऊ बा खिन को अवगत कराने हेतु पूज्य गुरुजी द्वारा बाबू भैया (बड़े भाई श्री बाबूलाल) को पचास वर्ष पूर्व लिखे गये निम्नलिखित पत्र से स्पष्ट है कि उन दिनों के छोटे-बड़े सभी शिविरों का संचालन, कष्ट सहन करते हुए भी पूज्य गुरुजी ने जितनी समता के साथ किया, पारमी संपन्न साधकों का सहयोग भी उतना ही सहायक सिद्ध हुआ। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अंततः धर्म की विजय हुई। साधकों को प्रभूत लाभ मिला। (बाराचकिया में भारत का 13 वां शिविर मार्च-70 में लगा था, देखें- वि. पत्रिका 16 अप्रैल, 2022, अंक-10.) – संपादक

## बाराचकिया का दूसरा ध्यान शिविर

पड़ाव: बाराचकिया, दि.: 10 सितंबर 1970

बाबू भैया, सादर वंदे !

बाराचकिया के दूसरे शिविर का आज रात को सफलतापूर्वक समापन हो रहा है। इस असीम पुण्य में परम पूज्य गुरुदेव, मां सयामा सहित तुम्हें तथा परिवार के सभी सदस्यों को, आश्रम के सभी सहयोगियों को तथा सभी परिचित-अपरिचित गुरु-भाइयों और गुरु-बहनों को भागीदार बना कर मन हर्ष विभोर हो रहा है।

यह शिविर राजस्थानियों का शिविर रहा और वह भी शेखावाटियों का। लगा जैसे मैं उस मरुधर में ही यह शिविर लगा रहा हूं। 30-32 साधकों से शिविर आरंभ हुआ। परंतु होते-होते कुछ पुराने साधक और जुड़े, इस प्रकार संख्या 37 पर आ पहुँची। 37 की संख्या बड़ी प्रिय रही। मुंबई के पिछले शिविर में भी 37 की संख्या थी और इसे देखकर मेरा ध्यान 37 बोधिपक्षीय धर्मों पर गया। वहां भी यही बात हुई। आजकल समय बहुत कम मिलता है। अन्यथा कई बार मन में यह आकांक्षा हुई कि 37 बोधिपक्षीय धर्म पर अच्छी तरह अध्ययन करके कुछ धर्म-पत्र लिखूं, जिससे कि एक पुस्तिका तैयार हो जाय। ये सारे के सारे धर्म सक्रिय साधना से ही सम्पर्क रखने वाले हैं और इनमें संक्षेपतः भगवान के सैद्धांतिक और व्यावहारिक धर्म दर्शन का निचोड़ समाया हुआ है। देखें कब अवसर प्राप्त होता है। शिविर में 25 महिलाएं बैठीं और 12 पुरुष। लगभग आधे साधक पुराने हैं आधे नए। यहां के समाज में भगवान की साधना के प्रति अच्छा आकर्षण पैदा हुआ है और इसका मूल कारण श्रीमती मोहिनी मां हैं। इस धर्म विहारिणी महिला ने अपने सद्व्यवहार से यहां की महिला समाज को आकर्षित और प्रभावित कर रखा है। पिछले शिविर में भी जो इतनी महिलाएं बैठीं, वे इसी के कारण। इस बार भी यही इन सब की कल्याण मित्र बनीं। बहुत पुण्यशालिनी और पारमी वाली महिला हैं। अपने वृद्ध पति की अथक सेवा में भी संलग्न रहती है। इसकी वजह से न जाने कितनी महिलाओं का कल्याण हुआ है और भविष्य में होगा। इसकी अपनी साधना भी काफी अच्छी होती है। यद्यपि रंगून की तरह अथवा पिछले शिविर की तरह तो नहीं ही हुई। क्योंकि इस बार का शिविर यहां की पुरानी धर्मशाला में लगा और महिलाओं के लिए स्थान का बहुत संकुचन रहा। एक 12'x20' के कमरे में 10 साधिकाएं और एक 20'x20' के अर्ध प्रकोष्ठ में लगभग 15 महिलाएं बड़ी मुश्किल से रहीं। उन 10 महिलाओं वाले कक्ष में ही यह मोहिनी मां भी रही। क्योंकि उससे सटा हुआ छोटा कमरा वयोवृद्ध शोभारामजी को दे दिया गया। उस भीड़भरे कक्ष में कितनी अच्छी साधना की उम्मीद की जाय! 20'x20' का अर्ध प्रकोष्ठ जो 'दीक्षाकक्ष' के रूप में मिला, उसकी भी उपयुक्त व्यवस्था नहीं हो पाई। एक ओर गली की खिड़कियां, दूसरी ओर धर्मशाला की चौक के दरवाजे, सामने की ओर एक सफेद पर्दे से आधे बँटे प्रकोष्ठ के उस पार महिलाओं का समूह। इन सारी बातों ने दीक्षा-कक्ष को धर्म धातु

से भरपूर हो सकने में बाधाएं उपस्थित कीं। अतः इस दीक्षा-कक्ष में पर्याप्त अभ्यास नहीं ही कराया जा सका।

फिर भी बेटी नर्मदा की प्रगति बहुत अच्छी रही। यह महिला भी श्रद्धा की पुतली ही है। पिछली बार किन्हीं पारिवारिक कारणों से सम्मिलित नहीं हो सकी। इस बार यदि इसी भाद्र महीने में शिविर लगे तब तो बैठ सके अन्यथा किन्हीं कारणों से बैठना असंभव हो जाए। अतः इस बात की मनौती मनाती रही कि यहां का शिविर भाद्रपद महीने में ही लगे। इस कामना के लिए बहुत बार भाव विह्वल हो जाया करती। मुझे एकाध बार पत्र भी लिखा। कहती है एक बार ध्यान में मैंने इसे प्रत्यक्ष आश्वासन दिया कि मैं भाद्र महीने में ही आकर तुम्हें साधना सिखाऊंगा। वाराणसी शिविर के समय फिर जब इस ओर की तारीखें कुछ आगे सरकने लगीं तो यह पुनः व्याकुल हुई और मुझे पत्र लिखा जो कि मुझ तक नहीं पहुँच पाया। लेकिन इसे लगा कि मैंने इसे फिर भी प्रत्यक्ष आश्वासन दिया। इस प्रकार की ये श्रद्धा की कहानियां बड़ी विचित्र लगती हैं और जी चाहता है कि इन पर खूब अच्छा वैज्ञानिक अनुसंधान हो। यह सच है कि मेरे मन में भी इस बच्ची के प्रति बड़ा गहरा वात्सल्य खिंचाव जागा। परंतु ये सारी बातें अनुसंधान का ही विषय हैं।

बेटी नर्मदा ने आश्चर्यजनक ढंग से विपश्यना के सारे सिद्धांतों को स्वीकार कर लिया और शरीर की तथा चित्त की सभी सुखद व दुःखद वेदनाओं को अनित्य ही माना, यहां तक कि पूर्वकाल में अपनी पुरानी साधना करते हुए जिस आंतरिक आनंद की अनुभूति हुई थी उससे भी गहरी आनंद की अनुभूतियां होने पर भी अब उन्हें आत्मानंद, ब्रह्मानंद और सच्चिदानंद आदि होने का मिथ्या भ्रम नहीं होने दिया। इस स्थिति को भी चित्त की ही एक विशेष स्थिति माना जो कि नित्य नहीं, बल्कि अनित्य है, चिर सुखद नहीं, बल्कि परिवर्तनशील होने के कारण अंततः दुःखद ही है, और आत्म नहीं बल्कि अनात्म ही है।

एक साधिका श्रीमती बसंती बहरी होने के कारण आनापान तक तो ठीक चली, परंतु विपश्यना में कठिनाइयां शुरू हो गईं। फिर चार-पांच दिन के बाद उसे भी स्वतः विपश्यना मिलने लगी। यद्यपि हमेशा बराबर नहीं मिली। कभी मिलती और कभी लुप्त हो जाती।

पुरानी साधिकाओं में एक विधवा ब्राह्मणी तारामणि थी, जिसकी साधना इस बार पहले से कहीं अच्छी हुई। परंतु 8वें-9वें दिन एक बार मेरे सामने चेकिंग के लिए बैठी तो चूरू वाले भगतजी की लड़की की तरह भाव विह्वल होकर देर तक रोती रही। उसने कहा कि अपने दुःखी जीवन में आंतरिक शांति प्राप्त करने के लिए न जाने कितने साधु-संतों के फेर में पड़ी, न जाने कितनी भजन-कीर्तन मंडलियों में शरीक होती रही परंतु उसे कहीं शांति नहीं मिली। अब इस मंगल मार्ग ने इसकी डगमगाती नैया को शांत धारा में प्रवाहित कर दिया और उसे अपने भविष्य के प्रति पूर्ण आश्वासन प्राप्त हो गया। उसी कृतज्ञता के मारे वह भाव विह्वल थी और देर तक भावावेश में क्रंदन करती रही।

पुरानी साधिकाओं में दुर्गा प्रसाद की पत्नी भगवानी पिछली बार विपश्यना से दूर ही रह गई थी, परंतु इस बार उसे विपश्यना मिली। भले निर्बाध भंग बोध तो नहीं हुआ, परंतु उदय-व्यय का जितना ज्ञान हुआ वही उसके लिए संतोष का कारण बना।

एक पुरानी साधिका शांति बचकानी। पिछली बार इसे निर्बाध भंग बोध हुआ था और शिविर के बाद महीनों उसे दिन-रात जब चाहो तब विपश्यना का प्रवाह बोध होते रहता था। परंतु पिछले लगभग एक महीने से वह बीमार थी और ज्वर-पीड़ित तथा दुर्बल होने के कारण उसका विपश्यना बोध मंदा पड़ गया था और इस बात का उसके मन पर बहुत बड़ा मलाल था। जब शिविर लगा और उसमें लगभग सभी पुरानी साधिकाएं दोबारा बैठने के लिए सम्मिलित हुईं और यह स्वयं रुग्ण होने के कारण न बैठ सकी तो इसके मन पर इस बात का बहुत गहरा पश्चात्ताप रहा और घर पर विलाप करती रही। 5-6 दिन के बाद एक बार शिविर में मुझसे मिलने आई और अपनी व्यथा सुनाने लगी, तो मैंने कहा कि औरों की तरह 10 दिन न बैठ सकी तो कोई हर्ज नहीं, वह चाहे तो 2-3 दिन बैठ सकती है। यह सुनकर वह हर्ष विभोर हो उठी। उसे इस बात का पता नहीं था कि पुराने साधक के लिए किसी शिविर में सम्मिलित होते हुए समय की सीमा नहीं रहती। अत्यंत दुर्बल और ज्वर ग्रस्त होते हुए भी वह वहीं रह गई और अपना सामान मँगवा लिया। शिविर में कुछ दिन रहकर उसे बड़ा मानसिक संतोष हुआ। खोई हुई विपश्यना भी कुछ मात्रा में पुनः प्राप्त हुई। परंतु अंत तक शारीरिक दुर्बलता बनी ही रही।

सभी पुरानी साधिकाओं को पहले से अधिक गहराइयां प्राप्त हुईं। नई साधिकाओं में साधारण उदय-व्यय का ज्ञान तो सभी को हुआ, परंतु निर्बाध भंग तो किसी-किसी को ही हुआ।

पुरुषों में एक पुराना साधक श्री चांदमल था, जो कि श्री शोभाराम जी का मुनीम है। यह व्यक्ति पिछली बार भी अच्छा सफल हुआ। परंतु पिछली बार श्री शोभाराम जी के साथ एक ही कमरे में रहने के कारण इसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। इस बार उसे अच्छा एकांत मिला और गहरी साधना कर सका। दूसरा साधक पुरुषोत्तम था, जिसको पिछली बार बहुत साधारण उदय-व्यय का ज्ञान लाभ हुआ था। परंतु उससे ही उसके मन की बहुत-सी दुर्बलताएं और संताप दूर हुए थे। इस बार हमेशा नहीं तो भी कई बार इसे निर्बाध भंग प्रवाह का बोध हुआ। यह एक प्रकार के चर्म रोग से पीड़ित था, उसमें भी बहुत बड़ा लाभ हुआ। इस बार इसकी पत्नी जीवनी देवी भी बैठी। उसे विपश्यना तो मिली, पर निर्बाध भंग प्रवाह नहीं मिला।

एक अन्य पुराना साधक विद्याधर था, जो इस बार एक सप्ताह बैठ पाया और लाभान्वित ही हुआ। महिलाओं में इसकी मां तारा भी बोधगया के बाद इस बार दुबारा बैठी और लाभान्वित हुई। इस बार इनके बहुत आग्रह पर इसके पिता टोडरमल को भी शिविर में सम्मिलित कर लिया। यह व्यक्ति किसी योगी के फेर में महीनों पड़ा रहा और इसी कारण लंबे समय तक निपट पागल हो गया था। इसीलिए पिछले शिविर में उनकी ओर से बहुत दबाव होने पर भी मैंने इसे स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि मेरे सामने अड़ुकिया का उदाहरण मौजूद था। परंतु इस शिविर में लिया और इसे कोई उपद्रव नहीं उठा, विपश्यना भी ठीक-ठीक मिल गई।

पुराने साधकों में एक व्यापारी ईश्वरी प्रसाद बैठा। वह किसी कारण से कोलकाता में दो दिन अधिक रुक गया, इसलिए समय पर बाराचकिया न पहुँच सका और परिणामतः केवल एक सप्ताह ही बैठ पाया। इसे पिछले शिविर की साधना से बहुत लाभ हुआ था। कहता है कि मेरे जीवन में एक नया मोड़ आ गया है। चित्त शांत रहता है। बुराई की ओर मन ही नहीं जाता। इस प्रभावपूर्ण परिवर्तन से लाभान्वित होकर इसने ही इस दूसरे शिविर का आग्रहपूर्ण आयोजन करवाया था। श्रद्धा और वीर्य दोनों ही पर्याप्त मात्रा में होने के कारण इस बार इसकी प्रगति और अधिक हुई। पुराने साधकों में नगर का एक अन्य वृद्ध व्यापारी तोलाराम भी शाम को 6:30 से 9:00 बजे के प्रवचन और साधना में भाग लेता रहा और अत्यंत संतुष्ट प्रसन्न रहा। यही दशा पुराने साधक बाबूलाल की थी।

शिविर का एक अन्य पुराना साधक था शंकर प्रसाद, जो कि पिछली बार उदय-व्यय तक पहुँचा। परंतु इस बार निर्बाध भंग प्रवाह से लाभान्वित हो सका। इसने 2-3 दिन के बाद मुझसे यह अनुमति मांगी और प्राप्त की कि वह शिविर समापन तक मौन व्रत का पालन करेगा और किया भी।

पुराने साधकों में रक्सौल से जगदीश प्रसाद और उसका बड़ा भाई ज्वाला प्रसाद आए और 2-3 दिन शिविर में भाग ले सके। इन्हें इस बात का मलाल रहा कि शिविर की सूचना उन्हें समय पर नहीं दी गई। अन्यथा ये दोनों और इनके परिवार के अन्य लोग भी धर्मलाभ ले पाते। इनके साथ इनका एक बहनोई भी आया, जिसकी पत्नी पिछले शिविर में 10 दिन बैठ चुकी थी। परंतु यहां इस व्यक्ति को 10 दिन से कम समय के लिए बैठने की अनुमति नहीं दे सका। वह अपनी पत्नी के साथ किसी अगले शिविर में आयेगा।

पुरुष साधकों में टोडरमल का दूसरा पुत्र (किशोरवय विद्यार्थी)-गोपालप्रसाद अपनी मां तारा के साथ बैठा और उदय-व्यय की स्थिति तक पहुँचा। एक नया साधक राम प्रसाद था, जिसने साधारण प्रगति की।

परंतु इस शिविर का सबसे सफल साधक रहा- रा.प्र. सराफ। प्रारंभ से इसकी प्रगति आश्चर्यजनक रही। प्रकाश निमित्त से परिपूर्ण आनापान और फिर उदय-व्यय के बाद निर्बाध भंग बोध की गहरी विपश्यना से लेकर सूक्ष्मतम अवस्था तक पहुँच गया। यद्यपि समापत्ति (मार्ग-फल प्राप्ति) लाभ नहीं हुआ तथापि उसकी सीमा तक बार-बार पहुँचा और लगभग निरंतर सीमावर्ती ही बना रहा। इसकी उपलब्धि देखकर शिविर संचालन का सारा श्रम सुफलित हुआ लगा।

श्रीमती मोहिनी मां और सराफ, इस शिविर की लाभकारी उपलब्धियां रहे।

* * * * * *

शिविर समापन की शाम को 8 से 9 बजे तक जो खुला प्रवचन हुआ, उसमें अच्छी संख्या में नर-नारी एकत्र हुए। शायद गांव भर की सभी राजस्थानी महिलाएं एकत्र हो गईं, जिनकी संख्या लगभग 100 तक थी। शिविर समापन के दूसरे दिन सुबह मुझे आगे के लिए प्रस्थान करना था। परंतु मुजफ्फरपुर वाले शाम को ही आ गए थे और शिविर समापन के बाद रात को ही मुजफ्फरपुर चलकर वहीं विश्राम करने का आग्रह करने लगे। दूसरे दिन सुबह 8:00 बजे ही वहां मेरा सार्वजनिक प्रवचन का कार्यक्रम घोषित किया जा चुका था। बाराचकिया की साधक मंडली को यह बात बहुत अरुचिकर लगी। मेरी अगवानी के लिए स्टेशन पर कोई नहीं पहुँच सका था इसके प्रायश्चित्त स्वरूप दूसरे दिन सुबह वे सब बड़ी संख्या में उपस्थित होकर विदाई का आयोजन करना चाहते थे। अतः इस प्रकार रात को चले जाना उन्हें नहीं सुहाया। विशेषकर मोहिनी मां तथा उनके परिवार के लोगों को तो बहुत ही अखरा। उनकी सांत्वना के लिए मैं शिविर स्थल से सीधे यात्रा पर नहीं निकला, बल्कि कुछ देर के लिए उनके घर गया। वहां दूध, फल के अतिरिक्त थोड़ा-सा मिष्ठान्न भी ग्रहण करना पड़ा और रात को 10:00 बजे वहां से विदा होकर 11:30 बजे मुजफ्फरपुर पहुँचा तो बिस्तर पर सिर रखते-रखते मध्य रात्रि बीत कर तारीख बदल चुकी थी। नींद आने के पहले कुछ देर तक अभी-अभी बाराचकिया में छोड़ कर आए हुए साधक-साधिकाओं के भाव-विभोर चेहरे बार-बार नजरों के सामने आते रहे। घनिष्ठ आत्मीयता के दृष्टिकोण से बाराचकिया के शिविर सदा अद्वितीय ही रहेंगे।

तुम्हारा अनुज,

सत्य नारायण गोयन्का.

**नये उत्तरदायित्व**

**वरिष्ठ सहायक आचार्य**

1. Mrs. Narin Po, Cambodia

**नव नियुक्तियां**

**सहायक आचार्य**

1. श्रीमती सुनंदा राठी, पुणे
2. श्री सुरेंद्र बिष्ट, गुड़गांव, हरियाणा
3-4. श्रीमती लीता एवं श्री शंकर हजारिका, गुवाहाटी, असम
5. श्रीमती सुषमा बिज, चेन्नई
6. श्रीमती जयश्री ठक्कर, कोची, केरल
7. श्री अरुण नावंदर, संगमनेर
8. Mr. Chang Yan HU, China
9. Mr. Yu Shu ZHANG, China

**बालशिविर शिक्षक**

1. सुश्री रोली ठाकुर, हावड़ा, प. बंगाल

## ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक्स पर उपलब्ध हैं। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि धम्मगिरि के लिए निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें: https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri

**विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए:**
https://schedule.vridhamma.org एवं www.dhamma.org

अथवा निम्न लिंक भी देखें--
https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN

## अति महत्त्वपूर्ण सूचना

सेंट्रल आईवीआर (इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पांस) संभाषण नंबर: 022-50505051 आवेदक इस नंबर पर अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर (फॉर्म में उल्लिखित नंबर) से अपनी शिविर पंजीकरण स्थिति की जांच करने, रद्द करने, स्थानांतरित करने या किसी भी केंद्र पर बुक किए गए अपने आवेदन की पुष्टि करने के लिए कॉल कर सकते हैं। वे इस सिस्टम के जरिए केंद्र से संपर्क भी कर सकते हैं। यह भारत के सभी विपश्यना केंद्रों के लिए एक केंद्रीय संपर्क नंबर है। ***

## सिलीगुड़ी में नये विपश्यना केंद्र 'धम्मतट' का उदय

विख्यात दार्जीलिंग की पहाड़ियों की तराई में स्थित सिलीगुड़ी (प.बंगाल) पंचई नदी के तट पर स्थित होने के कारण इसे "धम्मतट" नाम दिया गया है। सिलीगुड़ी को सिक्किम, नेपाल, भूटान, असम आदि पूर्वी स्थानों पर जाने का द्वार कहा जाता है। केंद्र न्यू जल्पाईगुड़ी रेल्वे स्टेशन से 9.5 किमी. और बगदोगरा हवाई अड्डे से 13.5 किमी. की दूरी पर है। केंद्र स्थान और दिशाओं के लिए "पंचनदी विपश्यना केंद्र" गूगल कर सकते हैं।

इस छोटे-से केंद्र में फिलहाल 14 पुरुष व 14 महिलाओं के लिए अच्छी सुविधा उपलब्ध है। अधिकांश शिविर हिंदी तथा अंग्रेजी में लगेंगे। धम्मसेवा देने के लिए पुराने साधक आवेदन कर सकते हैं। फिलहाल एक दिवसीय शिविर हर माह के अंतिम रविवार को तथा सामूहिक साधनाएं प्रत्येक रविवार को पूर्वाह्न 10 से 11 बजे तक होती हैं।

**संपर्क पताः** धम्मतट, पंचनदी विपश्यना केंद्र,
"सिलिगुड़ी पंचनदी विपस्सना ट्रस्ट,"
कवि आगमसिंह गिरि नगर, गली नं. 6, पंचनदी, डागापुर (डीपीएस स्कूल के सामने)
सिलीगुड़ी-734003. जिला- दार्जीलिंग (उत्तरी क्षेत्र- प. बंगाल)
Email: dhammasiliguri@gmail.com

**संपर्क** - श्रीमती शीलादेवी चौरसिया, फोन- 9830706481, 7679066689, 9434221531. **संपर्क** (केवल एक दिवसीय शिविर और समूह बैठकों के लिए) – 9932795421, 9434463532.

**बैंक विवरणः** Union Bank Of India, Siliguri- 734009, IFSC Code UBIN0558851; Savings A/c No 588502010001443; "SILIGURI PANCHANADI VIPASSANA TRUST"

(कृपया दान की रसीद प्राप्त करने के लिए दान का पूरा विवरण ट्रस्ट को अवश्य भेजें।)

******

## ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

### 1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

1. **रविवार** 09 अक्टूबर, 2022 को शरद-पूर्णिमा तथा पूज्य गोयन्काजी की पुण्यतिथि (29 सितंबर) के उपलक्ष्य में।
2. **रविवार**- 15 जनवरी, 2023 पूज्य माताजी की पुण्यतिथि (5 जन.) एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि (19 जन.) के उपलक्ष्य में।
3. **रविवार**- 07 मई, 2023 बुद्ध-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में।
4. **रविवार**- 02 जुलाई, आषाढ़-पूर्णिमा (धम्मचक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में।
5. **रविवार** 01 अक्टूबर को शरद-पूर्णिमा तथा पूज्य गोयन्काजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

### 2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिन

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*। **संपर्कः 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644** **(पूर्वाह्न 11 बजे से सायं 5 बजे तक ).** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)
Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register
Email: oneday@globalpagoda.org

सूचनाः कृपया पीने के पानी की बोतल अपने साथ लायें और पगोडा परिसर में उसे भर कर अपने साथ रखें।

**'धम्मालय' विश्राम गृहः** एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम की सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or email- info.dhammalaya@globalpagoda.org
अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्कः
info@globalpagoda.org or pr@globalpagoda.org

## दोहे धर्म के

ग्रहण करूं गुरुदेवजी, ऐसी शुभ आशीष।
धर्म बोधि हिय में धरूं, चरण नवाऊं शीश॥

जीव डुबकियां खा रहा, भवसागर के बीच।
अहो भाग! गुरुवर मिले, लिया बांह भर खींच॥

गहन निशा वन भटकते, हुआ विकल गुमराह।
सहज दिखाया धर्मपथ, गुरु ने पकड़ी बांह॥

धरमवीर ऐसा मिला, धुला चित्त का चीर।
मिटी देखते-देखते, तन की, मन की पीर॥

**केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड**
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
*की मंगल कामनाओं सहित*

## दूहा धरम रा

जन जन पीड़ित हो रह्या, किसो' क अत्याचार।
धरम जग्यां ही जगत रो, मिटसी पापाचार॥

धरती पर फिर उमड़सी, धरम गंग री धार।
प्यास बुझासी जगत री, करसी जन उद्धार॥

बेवै धरा पर धरम री, फिर रसवंती धार।
रूखा सूखा चमन फिर, हो ज्यावै गुलजार॥

देख दुखी करुणा जगै, देख सुखी मन मोद।
सैं रै प्रति मैत्री जगै, रवै धरम रो बोध।

**मोरया ट्रेडिंग कंपनी**
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
*की मंगल कामनाओं सहित*

**"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.**
**मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2566, श्रावण पूर्णिमा, 12 अगस्त, 2022**

**वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023**

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
**DATE OF PRINTING: 28 JULY, 2022, DATE OF PUBLICATION: 12 AUGUST, 2022**

If not delivered please return to:-
**विपश्यना विशोधन विन्यास**
**धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403**
**जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत**
**फोन : (02553) 244076, 244086,**
**244144, 244440.**
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org